रोज़ा और आपसी भाईचारा

अल्लाह की बन्दगी और वफ़ादारी

इमादुल उलमा अल्लामा सै0 मुहम्मद रज़ी साहिब क़िब्ला

रोज़ा इस्लाम की बतायी हुई इबादतों में बड़ी अहमियत रखता है। रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिसमें दिखावा नहीं होता और वह सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म पर रखा जाता है। क्योंकि कोई शख़्स भूखा–प्यासा इस वजह से नहीं रहता कि लोग उसकी तारीफ करें बल्कि उसकी असल चाहत यह होती है कि वह ख़ुदा की रिज़ा और ख़ुशी हासिल करे मगर इसके साथ ही यह बात भी याद रखनी चाहिए कि रोज़ा सिर्फ़ इस बात का नाम नहीं है कि आदमी सुबह से शाम तक फाक़ा करे बल्कि रोज़े की कुछ शर्तें भी हैं जिन्हें रोज़ेदार को पूरा करना ज़रूरी है वरना उसका रोज़ा सहीं न होगा। यह सारी बातें बड़ी किताबों में तफसील के साथ लिखी हुई हैं।

एक ख़ास बात रोज़े में यह भी है कि इससे आदमी के दिल में हमदर्दी का जज़्बा पैदा होता है क्योंकि जब कोई ख़ुद भूखा–प्यासा रहेगा तो दूसरे भूखों–प्यासों और ग़रीब व परेशान लोगों की उसको क़द्र होगी और जो लोग खूब खाते पीते रहते हैं उनको महसूस होगा कि ग़रीबों पर भूख में क्या गुज़रती है और जब कभी वह किसी भूखे को देखेंगे तो उनके दिल में हमदर्दी पैदा होगी कि हम इसकी मदद करें और उसकी इस तकलीफ को दूर कर दें इस तरह पूरे समाज में आपसी मदद का शौक़ उभर जायेगा। जब हमदर्दी का शौक़ हर एक दिल में पैदा होगा तो फिर यह हमदर्दी सिर्फ भूख और प्यास ही साथ मख़सूस न रहेगी बल्कि हर तकलीफ में एक–दूसरे के साथ हमदर्दी करने लगेगा और ख़ुदग़र्ज़ी या दूसरों की ज़रूरत और तकलीफ की तरफ से लापरवाही और बेतवज्जोही की आदत जाती रहेगी।

यह ज़ाहिर है कि इंसान की ज़िन्दगी कुछ इस तरह की है कि वह अकेला नहीं रह सकता बल्कि वह एक समाज का मोहताज है यानि वह अपने रहने–सहने, खाने–पीने, कपड़े और मकान वग़ैरा की तमाम ज़रूरतों में दूसरे इंसानों का मोहताज है और यह बात साफ है कि सब लोगों की हालत हमेशा एक सी नहीं रहा करती। आज कोई ग़रीब है तो कल अमीर हो गया और आज कोई अमीर है और दौलतमन्द है तो कल उसे एक वक़्त की रोटी भी न मिली। ग़र्ज़ ज़माने के हालात रोज़ बरोज़ बदलते रहते हैं और यह ज़रूरी नहीं कि इस वक़्त अगर कोई बड़ा दौलतमन्द है तो कल भी इसी हाल में बाक़ी रहेगा इसलिए अगर समाज के लोगों में आपसी हमदर्दी का शौक़ न पाया जाए तो फिर वक़्त पड़ने पर कोर्ट भी किसी की मदद न करेगा। चाहे उस वक़्त वह अमीर हो या ग़रीब हो और इसके नतीजे में पूरा समाज और पूरी क़ौम झगड़े और तबाही में पड़ जायेगी।

इसी लिए तो यह बात सबसे ज़्यादा ज़रूरी है कि हर एक शख़्स के दिल में दूसरों के

साथ हमदर्दी का शौक़ पैदा हो और किसी वक़्त इस शौक़ में किसी तरह की भी कमज़ोरी न आने पाए क्योंकि इस हमदर्दी के शौक़ की कमज़ोरी या बिलकुल ही न होना इन्सान की इज्तेमाओ ज़िन्दगी की तबाही की सबसे बड़ी निशानी है।

हम थोड़ी देर के लिए ख़ुद अपने जिस्म और अपनी सेहत व तन्दुरुस्ती और अपने जिस्म के हिस्सों पर ग़ौर करें तो हम यह देखेंगे कि हमारे पैर या हाथ या जिस्म के किसी मामूली से मामूली हिस्से में ज़रा फाँस लग जाती है या कहीं ज़रा सी ख़रोंच आ जाती है तो हमारा पूरा बदन उस हिस्से की तकलीफ को दूर करने में लग जाता है। ज़ाहिर है कि अगर इस तरह की मदद न हो तो हमारा बदन न तो सेहतमन्द रह सकता है और न ज़िन्दा ही रह सकता है।

इसी तरह की मदद और आपसी मदद का तरीक़ा क़ौमों के बाक़ी रहने और तरक़्क़ी करने के लिए भी ज़रूरी है और यह मदद मुमकिन नहीं है जब तक लोगों के दिलों में एक–दूसरे के लिए हमदर्दी का शौक़ न हो।

ग़रज़ अब यह बात साफ हो गयी कि रोज़ा आपसी हमदर्दी के जज़्बात को उभारता है और बे हिसाब तरक़्क़ी देता है और यही हमदर्दी का जज़्बा वह चीज़ है जिस पर हमारी इनफिरादी और समाजी ज़िन्दगी की बक़ा और तरक़्क़ी की बुनियाद है। □□□

अल्लाह की बन्दगी और वफ़ादारी

हम सच्चे मुसलमान उसी वक़्त हो सकते हैं जब हम सच्चे दिल से अल्लाह की इताअत करें और उसके सच्चे और वफ़ादार बन्दे की तरह ज़िन्दगी गुज़ारें। यह बात हम सब जानते हैं कि अल्लाह ही ने हमें पैदा किया है जब कि हम कुछ भी न थे। हमारा कही नाम व निशान तक न था। अल्लाह की ज़ाते अक़दस ही तो है जिसने हमें ज़िन्दगी की इज़्ज़त और दौलत अता फरमाई फिर सिर्फ ज़िन्दगी ही नही बल्कि अक़ल दी, समझ दी ताकि अपने लिये हम वह बातें इख़्तियार कर सकें जिनमें हमारे लिए अच्छाई हो और जिन चीज़ों में बुराई हो उन्हें छोड़ सकें और अपने आप को उनसे बचा सकें। अक़ल और समझ के अलावा अल्लाह ने हमें और भी बेशुमार नेमतें दी हैं और हमको पैदाईशी तौर पर ऐसी सलाहियतें बख़्शी हैं कि हम सारी काएनात पर अपना इक़्तेदार क़ाएम कर सकते हैं और हर चीज़ को अपने क़ाबू में ला सकते हैं। क़ुआने हकीम में ख़ुदा ने कई जगह फरमाया है कि काएनात की हर चीज़ को इंसान के लिए बनाया यानि उसके मातहेत कर दिया गया है। हमारे जिस्म की बनावट और जिस्म के हिस्सों की तरतीब में कैसी–कैसी ख़ूबियाँ और मसलहतें और हिकमतें रखी गयी हैं जिन पर ग़ौर करने के बाद अक़ल हैरान रह जाती है कि इस मिट्टी की मख़्लूक़ को उसके अज़ीम ख़ालिक़ ने कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया और क्या से क्या कर दिया और फिर उसके ज़िन्दा रहने के लिए कैसे–कैसे सामान किये गये। गर्मी की ज़रूरत थी तो उसका इन्तिज़ाम फरमाया। ठण्डक की ज़रूरत थी तो उसका इन्तिज़ाम किया। पानी और हवा के बिना ज़िन्दगी मुमकिन न थी तो इन चीज़ों को भी तैयार कर दिया ताकि हम बड़े चैन और राहत से ज़िन्दगी गुज़ार सकें। इन बेशुमार नेमतों में से किसी एक चीज़ को भी पैदा करने पर हमें कुदरत नहीं।

इस लिए हमारी पूरी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने पैदा करने वाले और पालने वाले की

बक़िया पेज ....8 पर

रख दिया। चूहे को देखते ही बिल्ली ने मोमबत्ती फेंक दी और चूहा पकड़ने के चक्कर में सब तितर–बितर हो गया। इससे मेहमानों और घर वालों को बड़ी कोफ़्त हुई।

यूरोप और अमरीका वालों की Training ऐसी ही होती है कि जब तक वह अपना खाना नहीं देखते वे तमीज़ तहज़ीब से रहते हैं मगर जैसे ही छोटे कमज़ोर मुल्कों के सोने, तेल और दूसरे खनिजों पर उनकी आँख पड़ती है तो वे दूसरों के हक़ हड़पने को हाथ से तमीज़ की मोमबत्ती फेंक देते हैं और फाड़ने वाले जानवरों (दरिन्दों) की तरह दौड़ पड़ते हैं और कमज़ोर देशों के माल पर और उनकी अध्यात्मिक सम्पदा पर हमला कर देते हैं, उसके लिए बेगुनाहों के ख़ून से अपने हाथ रंग लेते हैं। पच्छिम में बुराई, सेक्स, बदतमीज़ी, मारधाड़, लूट–खसोट, गन्दगी और गुनाहों की जड़ घर और घरेलू सिस्टम की ख़राबी है। अगर अमरीका और यूरोप के घरों में ख़ुदा की याद होती और वहाँ तस्बीह की गूँज होती तो उनमें शरीफ, शिष्ट इन्सान निकलते। लेकिन पश्चिम वाले सच सच्चाई से दूर हैं। इसलिए नतीजे भी कड़वे हैं। सिस्टम ग़लत है, अपनाने के क़ाबिल नहीं। जो उनका अनुकरण करेगा, उनके रास्ते पर चलेगा वह उनसे भी ज़्यादा बुरा होगा।

(जारी)

बक़िया रोज़ा और आपसी भाईचारा

बन्दगी और इताअत करें उसके हर हुक्म पर चलें और कभी कोई ऐसा काम न करें जिसमें उसकी नाराज़गी और नाखुशी हो और वह उस काम को पसन्द न फरमाता हो न तो हम ऐसा काम ज़ाहिर बज़ाहिर करें और न छुप कर करें क्योंकि हमारा अल्लाह हमारे हर अमल को जानता है। वह हमारे दिलों के तमाम भेद जानता है। और उससे हम कोई बात भी नहीं छुपा सकते। इसलिए उसकी बन्दगी और उससे हमारी वफादारी सिर्फ उसी वक़्त साबित हो सकती है जबकि हम अपनी छुपी हुई और खुफिया बातों में भी उसकी खुशी का ख़याल रखें और उससे डरते रहें उस तरह जिस सूरत से हम अपनी ज़ाहिरी बातों में उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ न करें।

इस्लाम के लफ्ज़ के माने तो आप जानते ही होंगे और जो शख़्स नहीं जानता उसे याद रखना चाहिए कि इसके माने हैं फरमाँबरदारी, इताअत करना और हुक्म मानना इसलिए मुसलमान वही है जो अपने अल्लाह को मानने वाला हो और उससे वफादारी करे और उसका हुक्म माने। उसकी फरमाँबरदारी यह है कि मुसलमान अपने खुदा के हर हुक्म पर अमल करे और उससे वफ़ादारी यह है कि उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ किसी दूसरे का सहारा न तलाश करे और उस काम में किसी की भी बात न माने जिसमें ख़ुदा के हुक्म को न मानना और बग़ावत ज़ाहिर होती हो।

□□□